प्रेस विज्ञप्ति

गोरखपुर, 18 सितम्बर। युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 50वीं एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की पांचवीं पुण्यतिथि समारोह में राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की स्मृति में आयोजित श्रद्धांजलि सभा को सम्बोधित करते हुए अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने अपने गुरू को श्रद्धान्जलि देते हुए कहा कि महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज समन्वय, सहनशीलता, संस्कार, प्रखर-राष्ट्रभक्ति, समाज सेवा की प्रतिमूर्ति थे। गोरखनाथ मन्दिर के स्वरूप का जो खाका महन्त दिग्वजयनाथ जी महाराज ने तैयार किया, महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने उसे पूर्ण किया। शिक्षा, स्वास्थ्य को सेवा का साधन बनाकर इस पीठ ने जन सेवा को ही भगवान की सेवा मानकर कार्य किया है। 48 शिक्षण-प्रशिक्षण, स्वास्थ्य एवं सेवा के संस्थान मन्दिर द्वारा संचालित है। महन्त अवेद्यनाथ जी महराज ने भारतीय सनातन धर्म एवं संस्कृति में प्रतिष्ठित धर्म-स्थलों की भूमिका को वर्तमान युग में साक्षात् प्रस्तुत किया।

उन्होंने आगे कहा कि सांस्कृतिक भारत की पुर्नप्रतिष्ठा का युग प्रारम्भ हो चुका है। उसका पूर्वाभास देश की जनता को हो रहा है। एक नये युग के भारत की आप सभी को सुनाई दे रही होगी। किन्तु देश की जनता सरकार के द्वारा किये जा रहे प्रयत्नों के साथ खड़ी हो और हम एक साथ मिलकर भारत को परमवैभव का प्रतिष्ठित स्थान दिलाएं। कोई भी विषय जन आन्दोलन का हिस्सा बनता है तभी वह पूर्ण होता है। उन्होंने गो- संरक्षण, गो- संवर्धन एवं प्लास्टिक का उपयोग न करने का आहवान करते हुए कहा कि सरकारे अपना प्रयत्न कर रहीं है लेकिन जनता भी को आगे आकर काम करना होगा। संतो के प्रवचन के ये विषय भी पर्यावरण, जल संरक्षण, उर्जा संरक्षण, प्लास्टिक का उपयोग न करने इत्यादि होने चाहिए। उन्होने कहा कि सरकार का प्रयास है कि संस्कृत केवल पूरोहिती का विषय न रहे बल्कि हमारे प्राचीनतम ज्ञान-विज्ञान के शोध का विषय हो। उन्होने आश्रमों का आहवन किया कि समृद्धशाली गौशाला बनाये ताकि गो-संवर्धन और गो-

संरक्षण हो सके। भारत की ऋषि एवं कृषि परम्परा को अपने परम्परागत रूप के साथ कायम रखने के लिए पालीथीन का निषेध होना चाहिए, क्योंकि पालीथीन से कृषि का नुकसान होता ही है साथ ही गायें जो हमारी ऋषि परम्परा की वाहक हैं, के लिए बहुत हानिकारक हैं।

गोरखपुर में आज बायोफ्यूल प्लांट के शिलान्यास की घोषणा करते हुए उन्होने कहा कि गोशालाओं से, शहर से, खेत से सभी जगह से निकलने वाले कचड़ो से अब ईधन बनाया जायेगा। गायों के पास उर्जा का असीम भण्डार है। गायों के गोबर का विशेष उपयोग बायोफ्यूल प्लांट में किया जायेगा। गोरक्षपीठ के दोनो पूर्व आचार्यों ने जैसा जीवन जिया था और समाज को जिस तरह प्रेरणा प्रदान की थी आज भी गोरक्षपीठ उसका पूरा का पूरा पालन कर रहा है। जितने कल्याणकारी कार्यक्रम गोरक्षपीठ द्वारा चलाये जाते है वे सब भारत की सनातन धर्म की परम्पराओं का हिस्सा हैं।

उन्होने कहा कि भारत के प्रधानमंत्री मा0 नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत की सांस्कृतिक राष्ट्रीयता अपना स्पष्ट आकार ले रही है। उन्होंने भारत के ऋषि परम्परा के प्रसार के योग को अन्तराष्ट्रीय मान्यता दिलाई। भारत की सनातन कुम्भ की परम्परा को युनेस्को द्वारा दुनियां की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर की मान्यता दिलाई है। आयुष्मान भारत के अन्तर्गत देश के 50 करोड़ गरीब परिवारों को एक वर्ष में 5 लाख रूप्ये की निःशुल्क चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध कराने का अद्वितीय निर्णय लिया है यह दुनिया की सबसे बड़ी चिकित्सा योजना है। 4 करोड़ परिवारों को विद्युत कनेक्शन दिये गये है। करोड़ो परिवारों को आवास उपलब्ध करा दिये गये है। यह बदलते भारत की वहीं तस्वीर है जिसकी परिकल्पना हिन्दुव और राष्ट्रीयता के प्रबल पक्षधर मेरे गुरूदेव महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज किया करते थे। सन्त-महात्मा और देश की जनता रामराज्य को चरितार्थ करने के लिए सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर चले, सरकार अपना काम प्रारम्भ कर चुकी है। राम को रोटी से जोड़कर हर गरीब को रोटी, आवास, कपड़ा, दवाई, बिजली, पानी और सुरक्षा जैसे मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराना ही होगा तभी रामराज्य आ सकता है।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक अनेक राष्ट्रीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आन्दोलन से जुड़े रहे। वे कहा करते थे कि समाज में यदि छुआछूत पाप नहीं है तो कुछ भी पाप नहीं है। भारत को महाशक्ति बनने के लिए अपनी सामाजिक विकृतियों से मुक्ति पानी होगी। सामाजिक सामूहिकता के बल पर ही राष्ट्रशक्ति खड़ी की जा सकती है। इस युग में सामाजिक समरता के वे अग्रदूत थे। उन्होंने आगे कहा कि श्रीगोरक्षपीठ अध्यात्मिक और सामाजिक पीठ है यही इसकी विशिष्ट पहचान है और गुरू जी ने अपना पूरा जीवन सनानत धर्म, हिन्दू संस्कृति के संरक्षण, शिक्षा, स्वास्थ्य, समतामूलक समाज दीन-दुःखियों के चेहरे पर खुशी लाने के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने आगे कहा कि मैं हिन्दू समाज को यह आश्वस्त करता हूॅ कि श्रीगोरक्षपीठ की राष्ट्र रक्षा का मंत्र हमारे जीवन का मंत्र है। हिन्दू समाज की सेवा और जिन आदर्शो एवं मूल्यों को महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं मेरे गुरूदेव महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने स्थापित किया है उनके प्रति गोरक्षपीठ सदैव समर्पित रहेगा और हम उसे आगे बढ़ाते रहेंगे। सामाजिक एकता के माध्यम से राष्ट्रीय एकता के गुरूदेव सदैव पक्षधर थे। बृहद हिन्दू समाज की एकता ही उनकी सांसारिक उद्देश्य की साधना थी और श्रीगोरक्षपीठ इसे मंत्र मानकर आगे बढ़ता रहेगा।

जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानन्द जी सरस्वती महाराज ने कहा कि राष्ट्र-सन्त महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज भारतीय संस्कृति, हिन्दू चिन्तक, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और सामाजिक समरसता के अग्रदूत थे। श्रीगोरखनाथ मन्दिर भारत की संस्कृति, संस्कारों और परम्परा का मन्दिर है। उन्होंने कहा यह पीठ धन्य है, जहाँ ऐसे सन्तों ने अपनी कर्मस्थली बनायी। महन्त अवेद्यनाथ महाराज ने एक ऐसे भारत का स्वप्न देखा जहाँ राष्ट्रवाद, सामाजिक समरसता, हिन्दुत्व और विकास दिखायी दे। वर्तमान उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री आज एक युवा सन्यासी है जिसपर भारत के सन्त समाज को गर्व है। वह इसी पीठ की तपस्या का प्रतिफल है। ऐसा हिन्दू सन्यासी जो बिना किसी भेदभाव के सभी के साथ एक समान व्यवहार करते हुए लोककल्याण के भगीरथ पथ पर चल पड़ा है। प्रदेश में परिवर्तन

की जो आध्यात्मिक लहर प्रारम्भ हुई है वह निश्चित ही लोक कल्याणकारी एवं लोक मंगल सिद्ध होगी।

श्रीराम जन्म भूमि न्यास के अध्यक्ष मणिराम छावनी, अयोध्या के महन्त नृत्यगोपालदास जी महाराज ने कहा कि देश के सनातन धर्म, हिन्दुत्व, सामाजिक समरसता, रामजन्मभूमि मुक्ति और पूर्वांचल के शैक्षिक प्रगति के नये आयाम दोनों ब्रह्मलीन महन्त जी ने प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज, महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज से लेकर अब महन्त योगी आदित्यनाथ तक, को हिन्दुत्व का संरक्षण विरासत में प्राप्त हुई है। गोरक्षपीठ ने भारत की सांस्कृतिक विरासत को सजोकर रखने एवं देश को धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक नेतृत्व दिया। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज हम सभी साधु-सन्त समाज के सर्वमान्य धर्म नेता थे। नाथ पंथ के इस महान तपस्वी के जीवन में सम्पूर्ण सनातन धर्म दिखता था। उन्होंने कहा कि मैं महन्त जी से सन् 1971 से जुड़ा रहा हूँ। महन्त जी जैसा महापुरूष नहीं देखा। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज जैसी बात करते थे वैसा आचरण करते थे। उनके कथनी और करने में कोई अन्तर नहीं था।

भारत सरकार के पेट्रीयल प्राकृतिक गैस एवं इस्पात मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने कहा कि बचपन से मैं नाथ समप्रदाय योगियों को देखता रहा हूँ। ये त्याग और तपस्या की प्रतिमूर्ति होते हैं। एक बार मैं उड़िसा में योगी आदित्यनाथ जी को लेकर गया और जब उन्हे पता चला कि कुछ मन्दिरो में दलितो का प्रवेश वर्जित है तो उन्होने मुझे कहा कि इसे ठीक करो। योगी जी ने यह बात इस नाते कही क्योंकि उन्हें संस्कार में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की विरासत मिली है। सामाजिक समरसता गोरक्षपीठ का संस्कार है। आज देश नई उचाईयों को छू रहा है। नये रूप में उभर रहा है निश्चित रूप से इसका श्रेय ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज जैसे महापुरूषों को जाता है । आवश्यकता पड़ने पर यह पीठ केवल प्रवचन नहीं करता अपितु निकल कर शौर्य भी दिखाता है। मोदी जी के नेतृत्व में भारत एवं योगी जी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश का बढ़ना तय है। आने वाले दिनो में गोरखपुर उर्जा का केन्द्र बनने वाला है। उर्जा का जो प्लांट यह लग रहा है। वह यहां के लोगो के लिए बहुत

लाभकारी होगा। एल0पी0जी0 की गैस पाइप लाइन यहा लाई जा रही है। साथ ही मोतीहारी से गोरखपुर को जोड़कर एक दूसरी पाइप लाइन लाई जा रही है, जो नेपाल और भूटान में जायेगी। इस प्रकार गोरखपुर उर्जा का केन्द्र बन रहा है। इससे गोरखपुर के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ने वाला है। अब यहा कचरे से भी इधन बनाया जायेगा। अब हमारा अन्नदाता किसान उर्जा-दाता भी बनेगा।

पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं पूर्व मुख्यमंत्री साध्वी उमा भारती ने कहा कि महन्त अवेद्यनाथ जी और अशोक सिंघल के आहवान पर राम, गंगा और तिरंगा के लिए हमने अपना सर्वस्व निक्षावर किया। मैं भी महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज से दीक्षा लेना चाहती थी और राजमाता सिंधियां और उनके प्रेरणा से मैने सन्यास लिया। योगी आदित्यनाथ जी उ0प्र0 के मुख्यमंत्री बने तो हमारी आकाक्षायें और आगे बढ़ गई। क्योंकि योगी जी महन्त अवेद्यनाथ जी के पद चिन्हों पर चलकर उत्तर प्रदेश को उत्तम प्रदेश बनाने का कार्य कर रहें हैं। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक अनेक राष्ट्रीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आन्दोलन से जुड़े रहे।

जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी वासुदेवाचार्य जी ने कहा कि राजनीति बिना धर्म के अपंग है। इसलिए जब धार्मिक व्यक्ति राजनीति में आता है तो राजनीति लोक कल्याण कार्य करता है। मण्डल कमीशन के कारण जब देश जातिगत संघर्ष में झुलस रहा था, जातियां आपस में मर कटने को तैयार थी, उसी समय महन्त अवेद्यनाथ जी के नेतृत्व श्रीराम जन्म भूमि का आन्दोलन चला जिसमे भारत के भिन्न-भिन्न हिस्सों से आने वाले हर जाति वर्ग के कार सेवको का चरण धोने का काम अयोध्या के सन्तों ने किया। यह है सामाजिक समरसता जिसके पोषक महन्त अवेद्यनाथ महाराज जी थे।

रोहतक हरियाणा से पधारे अलवर राजस्थान सांसद महन्त बालकनाथ जी महाराज ने कहा कि मुझे एक महीने तक महन्त अवेद्यनाथ जी का सेवा करने का अवसर मिला। जितने समय उनके साथ मैं रहता था वे मुझे जीवन जीने की कला सीखाते रहे। उनका स्वअनुशासन, कार्य के प्रति निष्ठा, जन सरोकारों के प्रति

जवाबदेही, धर्म की राजनीति में प्रतिष्ठा के प्रयत्न, समाज के असहाय, गरीब, दलित, पीड़ित के प्रति उनकी छटपटाहट हम सबको प्रेरणा देती है। उनको वास्तविक श्रद्धांजलि यहीं होगी कि हम भी स्वयं, परिवार, समाज एवं देश के लिए चलते रहें- चलते रहंे- चलते रहें। महायोगी गोरखनाथ की यह तपःस्थली लोक कल्याण, राष्ट्रीय पुर्ननिर्माण और सांस्कृतिक पुर्नजागरण को समर्पित है। इस पीठ ने एक अद्‌वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस पीठ ने देश ही नहीं दुनियां के धार्मिक केन्द्रो को मार्ग दिखाया है।

डॉ. रामबिलासदास वेदान्ती ने कहा कि रामजन्म भूमि आन्दोलन का अध्यक्ष बनने के लिए जब कोई संत नहीं तैयार हो रहा था। महन्त अवेद्‌यनाथ जी महाराज निर्भीक होकर अध्यक्ष का पद स्वीकर किया।

दिगम्बर अखाड़ा, अयोध्या के महन्त सुरेशदास जी ने कहा कि गोरखनाथ का भव्य मन्दिर महन्त दिग्विजयनाथ जी की देन है। महन्त अवेद्‌यनाथ जी कुशल राजनीतिक, सामाजिक समरसता के ध्वजवाहक और रूढ़िवादिता के विरूद्ध संघर्ष करने वाले सन्त थे। ब्रह्मलीन महन्त अवेद्‌यनाथ जी महाराज सनातन हिन्दू धर्म के पथप्रदर्शक थे। ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने पूर्वान्चल में शिक्षा का जो अभियान महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना कर चलाया था उसे ब्रह्मलीन महन्त अवेद्‌यनाथ जी महाराज ने विस्तारित किया। समाज की शक्ति संगठन में है और अवेद्‌यनाथ जी महाराज ने समाज को संगठित करके शक्तिशाली बनाया।

राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के प्रान्त प्रचारक सुभाष जी ने कहा कि अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन के सर्वमान्य धार्मिक नेता महन्त अवेद्‌यनाथ जी महाराज बनें। क्योकि वे पांथिक परम्पराओं से ऊपर राष्ट्रधर्म के सच्चे आराधक थे। वे निर्भय, नीडर, स्पष्टवादी धर्मात्मा थे। सच के साथ दृढ़ता से खड़ा होना उनकी विशेषता थी। वे सहृदय अभिभावक थे। करूणा की वे मूर्ति थे। उनका जीवन संत समाज को सदैव प्रेरणा देता रहेगा।

इस अवसर पर सिद्ध योग पत्रिका के सम्पादक सिद्ध गुफा सवाई आगरा के ब्रह्मचारी दासलाल जी ने ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के प्रति श्रद्धान्जलि अर्पित करते हुए कहा कि महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज एक ऐसे महात्मा थे जिन्होंने हिन्दू धर्म संस्कृति के सभी पंथो के प्रति समन्वय का भाव रखते हुए हिन्दू समाज की एकता का अद्वितीय कार्य किया।

इस अवसर पर श्रद्धाजलि देने वालों में नैमिषारण्य से पधारे स्वामी विद्या चैतन्य जी महाराज, महन्त शिवनाथ जी, महन्त गंगा दास जी, कालिका मठ के महन्त सुरेन्द्रनाथ जी, भी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज सामाजिक समरसता के अग्रदूत थे।

इस अवसर पर युगपुरूष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की पावन स्मृति में समर्पित महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूषण, की शोध पत्रिका विमर्श 2019 का विमोचन अतिथिगण द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ दोनों ब्रह्मलीन महाराज जी के चित्र पर पुष्पांजलि से हुआ। श्री रंगनाथ त्रिपाठी ने वैदिक मंगलाचरण, गोरक्षाष्ठक पाठ पुनीश पाण्डेय तथा डॉ. प्रांगेश मिश्र ने महन्त अवेद्यनाथ स्त्रोतपाठ प्रस्तुत किया। महाराणा प्रताप बालिका इण्टर कालेज, सिविल लाइन की छात्राओं द्वारा सरस्वती वन्दना एवं श्रद्धान्जलि गीत प्रस्तुत की गयी। अतिथियों का स्वागत महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो0 उदय प्रताप सिंह ने किया। मंत्री श्री रमापति शास्त्री, श्री शिव प्रताप शुक्ल, श्री रवि किशन, श्री महेन्द्र पाल सिंह, श्रीमती संगीता यादव, श्री राजेश त्रिपाठी, श्री राघवेन्द्र प्रताप सिंह, श्री बृजेश दूबे, श्री राकेश सिंह बघेल, श्री सीताराम जायसवाल, श्री प्रदीप पाण्डेय, डॉ. धर्मेन्द्र सिंह, श्री आनन्द गौरव, श्री भिखारी प्रजापति, डॉ. आर0पी0 त्रिपाठी, श्री विष्णु अजीत सरिया, श्री योगेन्द्र नाथ दूबे, श्री सत्यप्रकाश, प्रो0 गोपाल प्रसाद, श्री राजेश कुमार, श्री यशवन्त सिंह सहित बड़ी संख्या में प्रबुद्धजन सामाजिक, सांस्कृतिक संगठन के कार्यकर्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. श्रीभगवान सिंह ने किया।